

आमेर का कछवाहा वंश — संपूर्ण इतिहास

ढूँढाड़ क्षेत्र, कछवाहा वंश का उदय, मुगल-संबंध और जयपुर राज्य का स्वर्णकाल

ढूँढाड़ क्षेत्र और कछवाहा वंश का ऐतिहासिक महत्व

राजस्थान के इतिहास में जब हम मेवाड़ के गुहिल वंश की बात करते हैं तो वह संघर्ष, साका और बलिदान की गाथा है। आमेर/जयपुर का कछवाहा वंश इससे ठीक उल्टी राजनीतिक रणनीति का प्रतिनिधित्व करता है — यह समायोजन, कूटनीति और दीर्घकालिक सत्ता-संतुलन की कहानी है। यही कारण है कि RPSC RAS, SI और Patwari जैसी परीक्षाओं में इस वंश से जुड़े प्रश्न प्रायः "तुलनात्मक" प्रकृति के होते हैं — मेवाड़ बनाम आमेर, प्रतिरोध बनाम सहयोग।

भौगोलिक दृष्टि से कछवाहा वंश का मूल क्षेत्र **ढूँढाड़** कहलाता है, जो वर्तमान जयपुर, दौसा, अलवर, टोंक और सवाईमाधोपुर ज़िलों तक फैला हुआ है। यह क्षेत्र अरावली पर्वतमाला की पूर्वी ढलानों और शुष्क मैदानी इलाके के संगम पर स्थित है, जिसने इसे दिल्ली-आगरा से अजमेर-गुजरात जाने वाले व्यापारिक एवं सैनिक मार्गों के लिए सामरिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया। यही भौगोलिक स्थिति आगे चलकर इस वंश की मुगल-नीति को समझने की कुंजी है — दिल्ली के निकट होने के कारण आमेर के शासकों के पास मेवाड़ जैसा भौगोलिक "सुरक्षा-कवच" (अरावली के गहन दुर्गों जैसा) उपलब्ध नहीं था, इसलिए सशस्त्र प्रतिरोध की अपेक्षा कूटनीतिक समायोजन उनके लिए अधिक तर्कसंगत विकल्प बन गया।

अनुभवी टिप्पणी: परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि "आमेर ने मुगलों की अधीनता क्यों स्वीकार की, जबकि मेवाड़ ने नहीं?" — इसका सबसे संतुलित उत्तर भौगोलिक-सामरिक कारणों में निहित है, नैतिक श्रेष्ठता-हीनता में नहीं। मेवाड़ के पास अरावली के दुर्ग-तंत्र का सुरक्षा-कवच था; आमेर खुले मैदानी मार्ग पर स्थित था।

1. उत्पत्ति और प्राचीन परंपरा — राम के वंशजों से दुल्हराय तक

कछवाहा वंश की वंशावली को परंपरागत रूप से भगवान राम के पुत्र **कुश** से जोड़ा जाता है। यह दावा अधिकांश राजपूत वंशों की तरह पौराणिक-वंशावली परंपरा का हिस्सा है, जिसे इतिहास से ज़्यादा वंश-गौरव की दृष्टि से देखा जाना चाहिए — परीक्षा में इसे तथ्य के रूप में नहीं, बल्कि "परंपरा के अनुसार" के रूप में लिखना चाहिए।

परीक्षा सावधानी: राजस्थान के अधिकांश प्रमुख राजपूत वंश अपनी उत्पत्ति किसी सूर्यवंशी या चन्द्रवंशी पुराण-पुरुष से जोड़ते हैं — गुहिल वंश शिवि/राम से, राठौड़ वंश कन्नौज के गहड़वाल शासकों से, और कछवाहा वंश भी राम-पुत्र कुश से।

अयोध्या से स्थानांतरित होकर यह वंश साकेत (अयोध्या के निकट) और रोहिताश (सोन नदी के समीप, बिहार-झारखंड सीमा) में बसा। इसी वंशक्रम में **राजा नल** हुए, जिन्होंने लगभग 826 ई. में नरवर (ग्वालियर के निकट) की स्थापना की। राजा नल के पुत्र साल्हकुमार का दूसरा नाम **ढोला** था — यही ढोला, बीकानेर के पूंगल क्षेत्र की राजकुमारी मारू (मरवण) के साथ भारतीय लोक-स्मृति में अमर **ढोला-मारू** की प्रेमकथा का नायक बना। यह विवाह मात्र तीन वर्ष की अल्पायु में हुआ था।

राजा नल की इक्कीसवीं पीढ़ी में सोढ़ादेव के पुत्र तेजकरण हुए, जिन्हें इतिहास में **दुल्हराय** के नाम से जाना जाता है। दुल्हराय का विवाह दौसा के चौहान शासक रालपसी की पुत्री सुजान कंवर से हुआ। उस समय दौसा पर चौहानों और बड़गुर्जरी का संयुक्त शासन था, पर उनमें बढ़ती शत्रुता ने रालपसी को अपने दामाद दुल्हराय को बुलाने पर विवश किया।

परीक्षा बिंदु: दुल्हराय ने बड़गुर्जरों को पराजित किया, जिसके बदले रालपसी ने दौसा का राज्य उन्हें सौंपा। दुल्हराय ने अपने पिता सोढ़ादेव को दौसा का शासक बनाया — स्वयं आगे बढ़े।

यहाँ एक महत्वपूर्ण बिंदु समझना ज़रूरी है — दुल्हराय का दौसा-विजय अभियान कोई स्वतंत्र आक्रमण नहीं था, बल्कि एक **आमंत्रित हस्तक्षेप** था। यह पैटर्न आगे चलकर कछवाहा वंश की संपूर्ण राजनीतिक रणनीति में बार-बार दिखता है — स्वयं को किसी स्थापित शक्ति-संरचना में "सहायक" के रूप में प्रस्तुत करना, और फिर धीरे-धीरे उस संरचना पर ही अधिकार स्थापित कर लेना। यही रणनीति आगे भारमल-अकबर संबंधों में भी परिलक्षित होती है।

दौसा प्राप्त करने के बाद दुल्हराय ने मीणाओं को पराजित कर मांची/मांझी क्षेत्र जीता और उसका नाम भगवान राम के सम्मान में '**रामगढ़**' रखा। यहाँ उन्होंने अपनी कुलदेवी **जमवाय माता** का मंदिर बनवाया, जिससे यह स्थान आज जमवारामगढ़ के नाम से जाना जाता है।

परीक्षा सावधानी: छात्र अक्सर कछवाहा वंश की कुलदेवी और इष्टदेवी को एक मान लेते हैं। ध्यान रहे — **कुलदेवी जमवाय माता हैं**, जबकि कछवाहा शासकों की **इष्टदेवी शिला माता हैं** (जो बाद में मानसिंह द्वारा बंगाल से लाई गई)।

बिंदु	विवरण
वंश-उत्पत्ति परंपरा	भगवान राम के पुत्र कुश से
प्रारंभिक निवास	साकेत, रोहिताश
राजा नल	नरवर (ग्वालियर) की स्थापना, लगभग 826 ई.
साल्हकुमार / ढोला	ढोला-मारू लोककथा के नायक, विवाह मरवण (पूंगल, बीकानेर) से
दुल्हराय (तेजकरण)	दौसा विजय (आमंत्रित हस्तक्षेप), रामगढ़/जमवारामगढ़ की स्थापना
कुलदेवी	जमवाय माता
इष्टदेवी	शिला माता

2. आमेर की स्थापना और प्रारंभिक कछवाहा शासक

दुल्हराय और मारूणी के पुत्र **कोकिलदेव** ने मीणाओं से आमेर छीनकर उसे अपनी राजधानी बनाया। यहीं से इस वंश का नाम "**आमेर के कछवाहा वंश**" पड़ा। यह घटना सामान्यतः **1207 ई.** मानी जाती है, यद्यपि कुछ ग्रंथों में 1035 ई. का उल्लेख भी मिलता है — परीक्षा में दोनों तिथियाँ संदर्भ-सहित पूछी जा सकती हैं।

परीक्षा सावधानी: दुल्हराय और कोकिलदेव के योगदान को न उलझाएँ — दुल्हराय ने दौसा और रामगढ़ (जमवारामगढ़) जीते और बसाए, जबकि आमेर विशेष रूप से कोकिलदेव की विजय थी। "आमेर के कछवाहा वंश" नाम कोकिलदेव की इस विजय से ही उत्पन्न हुआ, दुल्हराय से नहीं।

आगे चलकर महाराणा कुंभा (1433-68 ई.) के काल में आमेर को मेवाड़ की करद रियासत (कर देने वाली अधीनस्थ रियासत) का दर्जा प्राप्त हुआ। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है, क्योंकि इससे स्पष्ट होता है कि कछवाहा वंश का प्रारंभिक राजनीतिक इतिहास मेवाड़ की छाया में बीता — आमेर तब एक छोटी, सैनिक रूप से सीमित शक्ति थी, जो बड़ी सत्ताओं की अधीनता स्वीकार कर अपना अस्तित्व बचाती थी। यह पैटर्न लगभग एक शताब्दी बाद मुगलों के साथ भी दोहराया गया।

चन्द्रसेन से पृथ्वीराज तक — "बारह कोटड़ी" व्यवस्था

कछवाहा शासक चन्द्रसेन के पुत्र **पृथ्वीराज कछवाहा** ने 1527 ई. के खानवा युद्ध में राणा सांगा का साथ दिया था — यह दर्शाता है कि उस समय तक आमेर मेवाड़ के साथ सैनिक-सहयोग के संबंध में बँधा हुआ था।

पृथ्वीराज का प्रशासनिक प्रयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है — उन्होंने अपने राज्य को **बारह भागों में बाँटकर अपने पुत्रों में वितरित किया, जिसे "बारह कोटड़ी" कहा गया।** यह एक सामंती व्यवस्था थी जिसका उद्देश्य उत्तराधिकार-विवादों को टालना था, किंतु यह भविष्य में सत्ता-संघर्ष का नया केंद्र बन गई।

पृथ्वीराज की पत्नी बालाबाई (बीकानेर के शासक लूणकरण की पुत्री) अत्यंत धार्मिक थीं और उन्हें **"आमेर की मीरां"** कहा जाता है।

🔑 याद रखें — राजस्थान की विभिन्न 'मीरां':

- **आमेर की मीरां:** बालाबाई
- **बागड़ की मीरां:** गवरीबाई
- **राजस्थान की दूसरी मीरां:** रानाबाई
- **राजस्थान की राधा:** मीरां बाई

✂️ 3. उत्तराधिकार संघर्ष और अफगान अधीनता

पृथ्वीराज ने अपनी रानी बालाबाई के प्रभाव में अपने कनिष्ठ पुत्र पूर्णमल को उत्तराधिकारी घोषित किया — और यहीं से वह संघर्ष शुरू हुआ, जिसने आगामी तीन दशकों तक आमेर को अस्थिर रखा।

उत्तराधिकार का घटनाक्रम:

पृथ्वीराज (पूर्णमल को उत्तराधिकारी घोषित)

↓

भीमदेव (ज्येष्ठ पुत्र, पूर्णमल को पराजित कर शासक बने, 1533-36 ई.)

↓

रत्नसिंह (भीमदेव-पुत्र, विलासी शासक) → **1544 ई. में शेरशाह सूरी की अधीनता स्वीकार**

↓

आसकरण (रत्नसिंह का छोटा भाई — भारमल के उकसाने पर रत्नसिंह को विषदान दिया)

↓

भारमल (आसकरण के साथ विश्वासघात कर स्वयं शासक घोषित हुए)

🔑 **परीक्षा बिंदु:** रत्नसिंह राजस्थान के प्रथम शासक थे जिन्होंने अफगान सत्ता (शेरशाह सूरी) की अधीनता स्वीकार की — यह "प्रथम" श्रेणी का तथ्य RAS Pre में कई बार पूछा गया है।

👑 4. भारमल — मुगल अधीनता की नींव (1547-1574 ई.)

भारमल पृथ्वीराज के सबसे कनिष्ठ पुत्र थे। पूर्णमल के पुत्र सूजा स्वयं को वास्तविक उत्तराधिकारी मानते थे। उन्होंने मेवात के सूबेदार मिर्जा सर्फुद्दीन के साथ मिलकर 1558 ई. में आमेर पर आक्रमण किया, जिससे भारमल को पहाड़ों में शरण लेनी पड़ी। 1561 ई. में जब सर्फुद्दीन स्वयं आमेर आया, भारमल को बड़ी धनराशि देकर समझौता करना पड़ा — साथ ही अपने पुत्र जगन्नाथ सहित कई राजकुमारों को बंधक के रूप में सौंपना पड़ा।

⚠ **परीक्षा सावधानी:** भारमल का अकबर से जुड़ना किसी "अचानक भक्ति" का परिणाम नहीं था, बल्कि एक स्पष्ट राजनीतिक गणना थी — उन्हें भय था कि यदि सुफुद्दीन को अकबर का समर्थन मिल गया तो आमेर सूजा के हाथ चला जाएगा।

अकबर से भेंट और सांभर विवाह

- **1562 ई.:** अजमेर मार्ग पर भारमल की अकबर से प्रथम भेंट।
- **20 जनवरी 1562:** सांगानेर में चकताई खाँ की मध्यस्थता से अकबर की अधीनता स्वीकार।
- **6 फरवरी 1562:** सांभर में **हरकाबाई** का विवाह अकबर से।
- **1570 ई.:** नागौर दरबार (भारमल के सहयोग से आयोजित)।
- **मुगल सम्मान:** 'अमीर-उल-उमरा' की उपाधि और 5000 का मनसब।

भारमल राजपूताना के पहले शासक थे जिन्होंने मुगलों की अधीनता स्वीकार करते हुए **वैवाहिक संबंध** भी स्थापित किए। हरकाबाई को अकबर ने 'मरियम-उज-जमानी' की उपाधि दी; इन्हीं से सलीम (जहाँगीर) का जन्म हुआ।

💡 **परीक्षा ट्रिक:** दोनों तारीखें क्रम में याद रखें — "जनवरी में अधीनता, फरवरी में विवाह" (20 जन० → 6 फर०, दोनों 1562 ई.)।

👑 5. भगवानदास — कूटनीति और मुगल सेवा (1574-1589 ई.)

भारमल की मृत्यु पर अकबर ने उनके पुत्र **भगवानदास** को 'राजा' की उपाधि देकर आमेर का शासक नियुक्त किया। भगवानदास को 5000 का मनसब और पंजाब का सूबेदार पद (1582-89 ई.) मिला।

भगवानदास ने अपनी पुत्री **मानबाई** का विवाह सलीम (जहाँगीर) से किया, जिनसे शहजादा खुसरो का जन्म हुआ। एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि भगवानदास ने अकबर के 'दीन-ए-इलाही' धर्म को स्वीकार करने से स्पष्ट इनकार किया था — जो दर्शाता है कि उनका मुगलों से संबंध राजनीतिक था, धार्मिक नहीं।

🔑 **परीक्षा बिंदु:** भगवानदास को अकबर ने **नगाड़ा और ध्वज** देकर सम्मानित किया था — ऐसा सम्मान पाने वाले वह राजस्थान के एकमात्र राजा **配合 - 配合**

⚔ 6. मानसिंह प्रथम — अकबर के नवरत्न और साम्राज्य विस्तार (1589-1614 ई.)

मानसिंह मात्र 12 वर्ष की आयु में 1562 ई. से मुगल सेवा में आ गए थे। अकबर ने उन्हें '**मिर्जाराजा**' और '**फर्जन्द**' (पुत्र) की उपाधियाँ दीं — वह अकबर के नवरत्नों में सर्वाधिक प्रभावशाली सैन्य सदस्य रहे।

सैन्य अभियानों की शृंखला

वर्ष	अभियान	परिणाम
1569 ई.	बूंदी के सर्जन हाड़ा के विरुद्ध	रणथम्भौर पर अधिकार
18 जून 1576	हल्दीघाटी का युद्ध	युवराज-काल में नेतृत्व, मेवाड़ अभियान
1580-81 ई.	काबुल के मिर्जा हाकिम के विरुद्ध	विजय, सिन्धु नदी तक पीछा, मनसब 5000+5000
1585 ई.	काबुल पुनः अभियान	काबुल का सूबेदार नियुक्त
1587-94 ई.	बिहार का सूबेदार	गिधोर के पूर्णमल की अधीनता
1594 ई.	बंगाल का सूबेदार	राजधानी टाण्डा से राजमहल स्थानांतरित

परीक्षा बिंदु: मानसिंह ने युवराज-काल में 18 जून, 1576 ई. के हल्दीघाटी युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व किया था — यह तथ्य अति महत्वपूर्ण है। बंगाल से लौटते समय मानसिंह जसोर के राजा केदार के यहाँ से **शिलामाता की मूर्ति** लाए और उसे आमेर में स्थापित करवाया।

मानसिंह ने वृन्दावन में गोविन्द देवजी मंदिर, गया में महादेव मंदिर और बैराठ में पंचमहल बनवाया। उनके दरबार में 'मानचरित्र' व 'महाराजकोष' जैसे ग्रंथ रचे गए। मानसिंह को अकबर ने **7000 का मनसब** दिया था, जो किसी भी राजपूत सरदार के लिए सर्वोच्च था।

7. मिर्जाराजा जयसिंह — पुरंदर की संधि और मुगल राजनीति (1621-1667 ई.)

मानसिंह के पौत्र जयसिंह प्रथम (मिर्जाराजा) मात्र 11 वर्ष की आयु में आमेर के शासक बने। उन्होंने **जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब** — तीन मुगल सम्राटों की सेवा की, जो एक दुर्लभ राजनीतिक उपलब्धि है। शाहजहाँ ने उन्हें 'मिर्जा राजा' की उपाधि (1638 ई.) दी थी।

दौराई का युद्ध और पुरंदर की संधि — विस्तृत विश्लेषण

दौराई के युद्ध (1659 ई.) में मिर्जाराजा जयसिंह ने दारा शिकोह के विरुद्ध **औरंगजेब का साथ दिया**। इसके बाद औरंगजेब ने उन्हें दक्षिण में शिवाजी के विरुद्ध भेजा।

पुरंदर की संधि (11 जून, 1665 ई.):

मिर्जाराजा जयसिंह की कूटनीतिक और सैनिक घेराबंदी से विवश होकर शिवाजी ने संधि की:

- शिवाजी ने 35 में से 23 किले मुगलों को सौंपे।
- 12 छोटे दुर्ग शिवाजी के पास रहे।
- शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को 5000 का मनसब दिया गया।
- यूरोपीय इतिहासकार 'मनुची'** इस संधि के समय उपस्थित था।

मिर्जाराजा जयसिंह ने आमेर में **जयगढ़ दुर्ग** बनवाया, जो तोपें ढालने का केंद्र था — यहीं एशिया की सबसे बड़ी तोप '**जयबाण**' स्थित है। उनके दरबार में रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि **बिहारी** ने '**बिहारी सतसई**' की रचना की।

8. सवाई जयसिंह द्वितीय — जयपुर की स्थापना और वैज्ञानिक क्रांति (1700-1743 ई.)

औरंगजेब ने विजयसिंह का नाम जयसिंह रखकर उन्हें 'सवाई' की उपाधि दी — तभी से वह सवाई जयसिंह कहलाए। 1707 ई. के उत्तराधिकार युद्ध में मुअज्जम (बहादुरशाह प्रथम) ने विजयी होकर सवाई जयसिंह को निष्कासित कर आमेर का नाम **मोमिनाबाद/इस्लामाबाद** रख दिया। सवाई जयसिंह ने **देवारी समझौते** (मेवाड़ और मारवाड़ के सहयोग) से आमेर पुनः प्राप्त किया।

हरड़ा सम्मेलन और अश्वमेध यज्ञ

बढ़ती मराठा शक्ति के विरुद्ध सवाई जयसिंह ने **17 जुलाई, 1734 ई. को भीलवाड़ा में 'हरड़ा सम्मेलन'** बुलाया, जिसकी अध्यक्षता मेवाड़ के जगतसिंह द्वितीय ने की, यद्यपि यह सम्मेलन असफल रहा। इसके बाद अगस्त 1734 ई. में सवाई जयसिंह ने प्रथम **अश्वमेध यज्ञ** करवाया; वह यह यज्ञ करने वाले **अंतिम हिन्दू नरेश** थे।

विज्ञान, खगोल और जयपुर की स्थापना

- **1725 ई.:** 'जीज-ए-मुहम्मद शाही' (ग्रह-नक्षत्र सारणी) और 'जयसिंह कारिका' की रचना।
- **पाँच जंतर-मंतर:** जयपुर, दिल्ली, मथुरा, उज्जैन, बनारस का निर्माण।
- **जयपुर जंतर-मंतर (1728 ई.):** सबसे बड़ा, जिसमें **सम्राट यंत्र (विश्व की सबसे बड़ी सौर घड़ी)** है। 2010 ई. में इसे यूनेस्को विश्व धरोहर घोषित किया गया।
- **18 नवम्बर, 1727 ई.:** जयपुर नगर की स्थापना (वास्तुकार: **विद्याधर भट्टाचार्य**)।

9. उत्तरकालीन शासक — ईश्वरीसिंह से सवाई मानसिंह द्वितीय तक

सवाई ईश्वरीसिंह (1743-1750 ई.)	राजमहल का युद्ध (1747) जीता, स्मृति में ईसरलाट/सरगासूली बनवाया। 1750 में मराठा दबाव में आकर आत्महत्या कर ली (ऐसा करने वाले एकमात्र शासक)।
माधोसिंह प्रथम (1750-1768 ई.)	कांकोड़ युद्ध (1759) में मल्हारराव होल्कर को हराया। 1763 में सवाईमाधोपुर बसाया।
सवाई प्रतापसिंह (1778-1803 ई.)	1799 ई. में हवामहल (5 मंजिल, 953 खिड़कियाँ) बनवाया। दरबार में 22 विद्वानों का समूह ' गंधर्व बाईसी ' था।
सवाई जगतसिंह द्वितीय (1803-1818 ई.)	कृष्णाकुमारी विवाद पर गिंगोली का युद्ध (1807) जीता। "जयपुर का बदनाम शासक" कहलाए। 1818 में अंग्रेजों से संधि की।
सवाई रामसिंह द्वितीय (1835-1880 ई.)	1876 ई. में प्रिंस ऑफ वेल्स की यात्रा पर पूरे नगर को गुलाबी रंग से रंगवाया (तभी से जयपुर "गुलाबी नगर" कहलाया)। अल्बर्ट हॉल और महाराजा कॉलेज बनवाए।
सवाई माधोसिंह द्वितीय (1880-1922 ई.)	1902 में एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक में गंगाजल के बड़े चांदी के जारों के साथ लंदन गए। सिटी पैलेस में 'मुबारक महल' बनवाया।
सवाई मानसिंह द्वितीय (1922-1956 ई.)	जयपुर के अंतिम शासक । 30 मार्च, 1949 को वृहत् राजस्थान के गठन पर राज्य के प्रथम राजप्रमुख बने।

10. अलवर का नरूका वंश — एक स्वतंत्र शाखा

अलवर में कछवाहा वंश की नरूका शाखा का शासन रहा। 1775 ई. में **प्रतापसिंह नरूका** ने अलवर जीतकर इसे अपनी राजधानी बनाया।

- **विनयसिंह:** मूसी महारानी की 80 खंभों की छतरी और रानी शीला के लिए **सिलीसेढ़ झील** ("राजस्थान का नन्दन कानन") बनवाई।
- **जयसिंह:** प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया; 'नरेन्द्र मण्डल' नाम दिया; अलवर में **हिन्दी को राष्ट्रभाषा** घोषित किया।
- **तेजसिंह:** स्वतंत्रता-काल के अंतिम शासक, जिनका नाम गांधीजी की हत्या मामले में आया था (सुप्रीम कोर्ट से बरी)।

? PYQ — विगत वर्षों के महत्वपूर्ण प्रश्न

Q1. भारमल ने अकबर की अधीनता किस वर्ष स्वीकार की? (RAS Pre 2021)

उत्तर: 1562 ई. (20 जनवरी, 1562 ई. को सांगानेर में)।

Q2. हल्दीघाटी के युद्ध (1576 ई.) में मुगल सेना का नेतृत्व किसने किया था? (SI 2021)

उत्तर: मानसिंह प्रथम ने (युवराज काल में)।

Q3. पुरंदर की संधि (1665 ई.) किनके मध्य हुई? (Patwari 2021)

उत्तर: मिर्जाराजा जयसिंह और शिवाजी के मध्य (11 जून, 1665)।

Q4. जयपुर नगर की स्थापना किसने की? (REET 2022)

उत्तर: सवाई जयसिंह द्वितीय ने (18 नवम्बर, 1727 ई. को)।

Q5. हवामहल का निर्माण किसने करवाया? (LDC 2022)

उत्तर: सवाई प्रतापसिंह ने (1799 ई. में, शिल्पी लालचंद थे)।

🔑 आमेर कछवाहा वंश — स्मरणीय संकेत (Memory Tricks)

- **मुख्य शासक-क्रम:** "भा-भ-मा-ज-ज" = भारमल → भगवानदास → मानसिंह → मिर्जाराजा जयसिंह → सवाई जयसिंह।
- **उत्तराधिकार-संघर्ष:** "रा-आ-भा" त्रिकोण = रत्नसिंह (विषदान) → आसकरण → भारमल (विश्वासघात कर शासक बने)।
- **भारमल की दो तिथियाँ:** "जन° अधीनता, फर° विवाह" = 20 जनवरी अधीनता, 6 फरवरी विवाह (1562 ई.)।
- **पुरंदर संधि:** "23-12-5" = 23 किले मुगलों को, 12 किले शिवाजी के पास, शम्भाजी को 5000 का मनसब।
- **जंतर-मंतर के पाँच स्थान:** "ज-दि-म-उ-ब" = जयपुर, दिल्ली, मथुरा, उज्जैन, बनारस।